

M.S.B Board

कक्षा : 10

हिंदी – 2014

समय: 3 घंटे

पूर्णांक : 80

---

सूचना :- शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

1. (अ) निम्नलिखित विधान के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्य-पाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए :2

(1) पंडित परमसुख ने रामू की माँ से कहा कि मुँह न मोड़ो-

(अ) अपनी भोली बहू से।

(ब) धार्मिक क्रिया-कर्म के लिए आवश्यक खर्च से।

(क) मिसरानी द्वारा दी हुई मौलिक सलाह से।

(2) विदेशी विद्वान राष्ट्रपति भवन में पहुँचे तब -

(अ) शाम हो गई थी।

(ब) ठीक चार बजे थे।

(क) दोपहर हो गई थी।

(आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्य-पाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए : 3

- (1) अश्वारोही के सारे शरीर का \_\_\_\_\_ उबल-सा रहा था।
- (2) फिर कृति कैसे \_\_\_\_\_ हो सकती है।
- (3) आनंदभवन \_\_\_\_\_ से भरा हुआ था।

(इ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्य-पाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

- (1) पलाश के लाल-लाल फूल किसके समान दिखाई देते हैं?
- (2) कूर्माचल का नाम लेते ही लेखक की आँखों के आगे कौन-सी तस्वीर खड़ी हो जाती है?
- (3) लेखक ने किसकी आँखों में टावेल लगाया?
- (4) महंत ने नगर की असलियत जानने पर क्या फैसला किया?
- (5) मैनेजर के लिए किस ऑफिस से पाँचवाँ फोन आया था?

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से कोई एक वाक्य किसने किस संदर्भ में कहाँ है? पठित गद्य-पाठ के आधार पर लिखिए : 3

- (1) “इतनी जल्दी ताला-वाला क्यों लगा दिया आज.....।”
- (2) “मेरे लिए कामयाबी का अर्थ है- सबसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना ।”

(उ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्य-पाठों के आधार पर संक्षेप में (साठ-सत्तर शब्दों तक) लिखिए :

9

- (1) कबरी बिल्ली ने रामू की बहू को किस प्रकार तंग कर रखा था?
- (2) राजकुमार संन्यासी को देखकर आश्चर्यचकित क्यों हो गया?
- (3) राष्ट्रपति और जीवनशास्त्री के बीच आनंद के क्षण को लेकर क्या बहस हुई?
- (4) मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी का क्या महत्त्व है?
- (5) महात्मा गांधीजी को स्नान के लिए ठीक समय पर गरम पानी क्यों पहुँचाया न जा सका?

(ऊ) निम्नलिखित पठित गद्य परिच्छेद पर आकलन हेतु दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में लिखिए :

3

यह पर्णपाती वृक्ष है। अर्थात् वर्ष में एक बार इसके सभी पत्ते गिर जाते हैं और यह पर्णविहीन हो जाता है। सामान्यतया सर्दियों के मौसम में इसके पत्ते गिरते हैं और गर्मियों के मौसम में फूलों के समाप्त होते-होते नए पत्ते निकलने आरंभ हो जाते हैं। पलाश का वृक्ष जब तक एक छोटी झाड़ी के रूप में होता है, तभी इसमें बड़े-बड़े पत्ते निकलने लगने हैं। सामान्यतया यह देखा गया है कि जहाँ फूल निकलते हैं, वहाँ पत्ते नहीं निकलते और जहाँ पत्ते निकलते हैं, वहाँ फूल नहीं निकलते।

- (1) पलाश को पर्णपाती वृक्ष क्यों कहा जाता है?
- (2) सर्दी और गर्मी में पलाश की क्या स्थिति रहती है?
- (3) परिच्छेद में पलाश की कौन-सी खासियत सूचित हुई है?

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पदय-पाठों में प्रयुक्त, कोष्ठक में दिये उचित शब्द से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए : 3

- (1) और नहीं \_\_\_\_\_ में भी गति।
- (2) गुण ही जन-मन \_\_\_\_\_ , ताज हो ।
- (3) हिंद के बहादुरा, \_\_\_\_\_ बालको!  
(किरीट, शूरवीर, खग, पंखों)

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पठित पदय-पाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

- (1) कबीर ने साई से अपने लिए क्या माँगा है?
- (2) सुबह से हमने क्या नहीं देखा है?
- (3) मेघ को किसने जुहार किया ?

(इ) निम्नलिखित पठित पदयांश पर आकलन हेतु दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3

यदि तू लौट पड़ेगा थककर,  
अंधड़ कालबवंडर से डर,  
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझको हँस-हँसकर।  
खग, उडते रहना जीवनभर !”

- (1) कालबवंडर से कवि का क्या तात्पर्य है?
- (2) खग से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
- (3) अपनों दवारा खग की खिल्ली कब उडार्इ जाएगी?

(ई) निम्नलिखित पठित पदय-खंड का सरल गदयार्थलिखिए : 3

दान दिए धन ना घटे, नही न घटे नीर।  
अपनी आँखों देख लो, यों क्या कहे कबीर।।

(3) निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पदय-पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए: 6

- (1) ब्रजनारियाँ यशोदा माँ को अनोखा पूत जनने का उपालंभ क्यों देती हैं ?
- (2) कवि रहीम ने धन और इज्जत के बारे में क्या कहा है?
- (3) गजलकार दुष्यंत कुमार ने आम आदमी की मजबूरियों को किन शब्दों में अभिव्यक्त किया है?
- (4) 'मेघ' रुपी 'मेहमान' के आने से प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन हुए?

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए : 8

- (1) चंदा माँगने वाले और देने वाले लोग एक दूसरे को किस प्रकार पहचान लेते हैं?
- (2) तुलसी में कौन-कौनसे औषधीय गुण हैं?
- (3) थिंफू का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
- (4) धनंजय ने नदी में डूगती महिलाओं को कैसे बचाया?

अथवा

निम्नलिखित दो पठित पूरक पाठों में से किसी एक का सार लिखिए :

- (1) गंगा बाबू हैं कौन?
- (2) टेसी थॉमस।

(अ) निम्नलिखित दो शब्दों में से किसी एक शब्द का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- (1) धीरे-धीरे;
- (2) कि।

(आ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए :

1

(1) वाह ! कितना सुंदर बगीचा है!

(2) उसकी स्थिति होटल के 'शेफ' की तरह हो गई।

(इ) कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य का कालपरिवर्तन कीजिए :

1

(1) वह लगातार रो रहा था। (पूर्ण वर्तमानकाल)

(2) इतने लोग छत पाते हैं। (सामान्य भूतकाल)

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए :

1

(1) पलाश की लकड़ी से यज्ञ में काम आने वाले पात्र बनाए जाते हैं।

(2) उसके आँसुओं ने स्पीड पकड़ ली।

अथवा

निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दौड़ना :

(2) चलना :

(उ) निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

1

(1) लगना :

(2) पीना :

अथवा

निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया रूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

- (1) रानी ने आया से बच्चे को खिलवाया।
- (2) भूकंप ने उन्हें नींद में ही सुलाया।

(ऊ) निम्नलिखित तीन वाक्यों में से कोई दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए : 2

- (1) आवाज बहु के कान में पहुँचा।
- (2) तौलिया भिगकर वजनदार हो गई।
- (3) तुम पश्चिम के और जाते है।

अथवा

निम्नलिखित तीन वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों में योग्य विराम-चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

- (1) सर वह बर्तन माँजने वाली
- (2) हो गई पार्टी पत्नी मुस्कारा रही है
- (3) देखिए मेनू में एक खास परिवर्तन करना है

(ए) निम्नलिखित पाँच मुहावरों में से किन्हीं तीन मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 3

- (1) मन लगाना :
- (2) मस्तक नवाना :
- (3) खिल-खिलाकर हँसना :
- (4) नेत्र बेचकर चित्र खरीदना :
- (5) निगल जाना :

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से अधोरेखांकित तीन वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(खरीद लेना, मालूम होना, गवारा न करना, बहुत ,खुश होना)

(1) उसे पता चला कि कुछ नए दूधवालों ने धंधा शुरू किया है।

(2) दामू ने हलवाई से पाँच किलो मिठाई मोल ली।

(3) तरह-तरह के फल देखकर बच्चे फूले नहीं समाते।

5. निम्नलिखित चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग डेढ़ सौ से दो सौ शब्दों तक निबंध लिखिए :

10

(1) विज्ञान के चमत्कार;

(2) हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर;

(3) एक समाजसेवक की आत्मकथा;

(4) यदि हिमालय न होता।

(अ) निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक दो पत्रों में से किसी एक पत्र का लिफाफे सहित प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए :

4

(1) दसवीं में पढने वालीवाला सुधा/सुधीर देसाई, 20 विद्यानगर, कुडाळ से न्यू इंग्लिश स्कूल, कुडाळ के प्रधानाचार्य के मार्फत मा. शिक्षाधिकारी, माध्यमिक शिक्षण विभाग, जिला परिषद, सिंधुदुर्ग को पत्र लिखकर अपनी जन्मतिथि में सुधार के लिए प्रार्थना पत्र लिखती/लिखता है।

(2) रमेश/रमा पवार, 74 विद्याप्रसाद, प्रतापसिंह नगर, सातारा 415004 से मा.

व्यवस्थापक, अजब पुस्तकालय, भवानी मंडप, कोल्हापुर को पत्र लिखकर विशेष अध्ययन के लिए मान्यवर हिंदी लेखकों की कुछ पुस्तकें मँगाता/मँगाती है।

अथवा



निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए :

धुलार्ड के किए प्रयोग किए जानेवाले साबुन का विज्ञापन तैयार कीजिए।

(आ) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक दीजिए और यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है :

4

चार चोर \_\_\_\_ धन चुराना \_\_\_\_ बँटवारे के लिए जंगल में जाना \_\_\_\_ भूख लगना \_\_\_\_ दोनों का मिठाई लाने नगर में जाना \_\_\_\_ मन में पाप \_\_\_\_ मिठाई में जहर मिलाना \_\_\_\_ जंगल के दोनों चोरों की भी नीयत बिगड़ना \_\_\_\_ हाथ-मुँह धोने के बहाने कुएँ पर ले जाना \_\_\_\_ कुएँ में धकेलना \_\_\_\_ शेष दोनों का मिठाई खाना \_\_\_\_ परिणाम।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्य-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

4

आकाश में ग्रहों का पता लगाना जरा भी कठिन कार्य नहीं है। ये सभी सूर्य के भ्रमणपथ के आसपास ही रहते हैं। सूर्य आकाश में जिस मार्ग से खिसकता दिखाई देता है, उसे रविमार्ग कहते हैं। इस रविमार्ग के सत्ताईस समान भाग नक्षत्र और बारह समान भाग राशियाँ हैं। ये नक्षत्र या राशियाँ वर्तुलाकार के भाग हैं और इसीलिए इन्हें विभागात्मक नक्षत्र अथवा राशियाँ कहा जाता है। इनके नाम भी इन विभागों के समीप आए हुए नक्षत्रों और राशियों के अनुसार हैं। अधिक स्पष्टता के लिए इन दूसरे प्रकार के नक्षत्रों अथवा राशियों को तारात्मक नक्षत्र या राशियाँ कहा जाता है। सूर्य, चंद्रमा और ग्रह नक्षत्रों अथवा राशियों में से होकर गुजरते रहते हैं। अमुक समय में आकाश में ये सभी कहाँ दिखाई देंगे, इनका दैनंदिन ब्योरा अपने देशी पंचांगों में दिया जाता है। जिनका आकाश के तारों से परिचय है, ऐसे लोग स्थिर ग्रहों को झट पहचान लेते हैं।

M.S.B Board

कक्षा : 10

हिंदी – 2014

समय: 3 घंटे

पूर्णांक : 80

---

## उत्तरकुंजी

सूचना :- शुद्ध भाषा एवं सुवाच्य लेखन अपेक्षित है।

1. (अ) निम्नलिखित विधान के साथ दिए गए विकल्पों में से पठित गद्य-पाठों के आधार पर सही विकल्प जोड़कर प्रत्येक विधान पूर्ण वाक्य में लिखिए : 2

(1) पंडित परमसुख ने रामू की माँ से कहा कि मुँह न मोड़ो-

(अ) अपनी भोली बहू से।

(ब) धार्मिक क्रिया-कर्म के लिए आवश्यक खर्च से।

(क) मिसरानी दवारा दी हुई मौलिक सलाह से।

(2) विदेशी विद्वान् राष्ट्रपति भवन में पहुँचे तब -

(अ) शाम हो गई थी।

(ब) ठीक चार बजे थे।

(क) दोपहर हो गई थी।

(आ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित गद्य-पाठों में प्रयुक्त शब्दों से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए : 3

(1) अश्वारोही के सारे शरीर का रुधिर उबल-सा रहा था।

(2) फिर कृति कैसे भूषित हो सकती है।

(3) आनंदभवन अतिथियों से भरा हुआ था।

(इ) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्य-पाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

(1) पलाश के लाल-लाल फूल किसके समान दिखाई देते हैं?

उत्तर : पलाश के लाल-लाल फूल आग की लपटों के समान दिखाई देते हैं।

(2) कूर्माचल का नाम लेते ही लेखक की आँखों के आगे कौन-सी तस्वीर खड़ी हो जाती है?

उत्तर : कूर्माचल का नाम लेते ही लेखक की आँखों के आगे रामगढ़ की एक शाम धुँधली तस्वीर की तरह खड़ी हो जाती है।

(3) लेखक ने किसकी आँखों में टावेल लगाया?

उत्तर : लेखक ने आँखों में टावेल लगाया क्योंकि वह उसकी आँखों के बहते आँसूओं को पोंछना चाहता था।

(4) महंत ने नगर की असलियत जानने पर क्या फैसला किया?

उत्तर : महंत ने नगर की असलियत जानने पर नगर को छोड़कर जाने का फैसला किया।

(5) मैनेजर के लिए किस ऑफिस से पाँचवाँ फोन आया था?

उत्तर : मैनेजर के लिए कलेक्टर आफिस से पाँचवा फोन आया था।

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से कोई एक वाक्य किसने किस संदर्भ में कहाँ है? पठित गद्य-पाठ के आधार पर लिखिए :

3

(1) “इतनी जल्दी ताला-वाला क्यों लगा दिया आज.....।”

उत्तर : विनायक बाबू बड़े साहब के बँगले से काफी देर से रवाना हुए थे। लोकल ट्रेन से अपने स्टेशन पर उतर कर वे साइकिल स्टैंड पर अपनी साइकिल लेने पहुँचे, तो वहाँ ताला लगा हुआ था। विनायक बाबू ने साइकिल स्टैंडवाले की खोली की सिकनी खटखटाई, तो दरवाजा खोल कर गनपत बाहर आया। तब विनायक बाबू ने गनपत से यह वाक्य कहा, “इतनी जल्दी ताला-वाला क्यों लगा दिया आज.....।”

(2) “मेरे लिए कामयाबी का अर्थ है- सबसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना।”

उत्तर : साक्षात्कारकर्ता प्रीति मोंगा से पूछता है कि सफलता या कामयाबी को किस अर्थ में लेती हैं, तो इस प्रश्न के जवाब में प्रीति कहती हैं, “मेरे लिए कामयाबी का अर्थ हैसबसे ज्यादा चुनौतियों का सामना करना।”

(3) निम्नलिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर पठित गद्य-पाठों के आधार पर संक्षेप में (साठ-सत्तर शब्दों तक) लिखिए :

9

(1) कबरी बिल्ली ने रामू की बहू को किस प्रकार तंग कर रखा था?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न लेखक भगवतीचरण वर्माजी द्वारा लिखित ‘प्रायश्चित’ नामक पाठ से लिया गया है। वर्माजी ने इस पाठ में यह बताया है कि कबरी बिल्ली ने रामू की बहू को किस प्रकार तंग कर रखा था।

रामू की बहू को ससूराल में सभी सुख थे, पर वह घर की कबरी बिल्ली से परेशान थी। सास ने घर की सारी जिम्मेदारियाँ उसे सौंप दीं। भंडारघर की चाबियाँ उसकी कमर में लटकने लगीं, नौकरों पर उसका हुक्म चलने लगा। सास ने भी माला ली और पूजापाठ में लग गई। रामू की बहू दूध ढूँककर मिसरानी को सामग्री देने जाती, लौटती तब तक दूध गायब हो जाता था। कबरी बिल्ली के कारण खाना-पिना मुश्किल हो गया था। दूध से भरी कटोरी हो या बाजार से लाई हुई मलाई, देखते ही कबरी के पेट में पहुँच जातीं।

इस प्रकार कबरी बिल्ली ने अपने उत्पातों से रामू की बहू को तंग कर रखा था।

(2) राजकुमार संन्यासी को देखकर आश्चर्यचकित क्यों हो गया?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न लेखक प्रेमचंद द्वारा लिखित 'शिकारी राजकुमार' नामक पाठ से लिया गया है।

रीवाँ रियासत के राजकुमार को शिकार करने का बहुत शौक था। जंगल में शिकार का पीछा करते-करते वह बहुत दूर पहुँच गए। हिरन का तेज गति के कारण राजकुमार को उस पर गोली चलाने का मौका नहीं मिल रहा था। परंतु नदी के ऊँचे किनारे ने हिरन को रोक दिया और राजकुमार की एक ही गोली ने उसे ढेर कर दिया। राजकुमार अपने अचूक निशाने से हिरन का शिकार करने में सफल हो गए।

अचानक नीचे से उछलकर एक विशाल शरीरवाला पुरुष उसके सामने आया। वह एक संन्यासी था। वह व्यक्ति हृष्ट पुष्ट तथा बहुत ही सुंदर था। मुख के भाव उसके हृदय की स्वच्छता प्रकट कर रहे थे। वह बहुत ही दृढ़ निश्चयी लग रहा था। उसका चरित्र निर्मल था। भय लेशमात्र भी छू नहीं गया था।

संन्यासी के इस दिव्य रूप को देखकर राजकुमार उसे देखता ही रह गया।  
राजकुमार बहुत आश्चर्यचकित हो गया कि संन्यासी उसे पहचानता है।

(3) राष्ट्रपति और जीवनशास्त्री के बीच आनंद के क्षण को लेकर क्या बहस हुई?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न आनंद का क्षण पाठ से लिया गया है। इसके लेखक श्री  
कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर जी हैं। लेखक ने जीवन में प्राप्त हर पल को  
विशेष आनंद का पल बनाने को कहा है।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार पर विचार-विमर्श करने के लिए राष्ट्रपति महोदय ने  
एक विदेशी विद्वान को बुलाया। उसमें जीवनशास्त्री को भी निमंत्रित किया  
गया। शाम के चार बजे बैठक रखी। लेकिन साढ़ेचार बजे तक जीवन शास्त्री  
महोदय बैठक में नहीं पहुँचे।

वे रास्ते में कबूतरबाजी का मैच देखने का आनंद ले रहे थे। यह सुनकर  
राष्ट्रपति जी को गुस्सा आया तब उन्होंने कहा कबूतरों का मैच देखना इस  
राष्ट्रपति काम से ज्यादा जरूरी था क्या? इस पर जीवनशास्त्री ने जबाब दिया  
जरूरी- गैरजरूरी का प्रश्न नहीं है। यह तो आनंद का प्रश्न है। जीवन में आनंद  
का क्षण आ गया था। उसकी मैं उपेक्षा नहीं कर सकता।

इस प्रकार आनंद के क्षण को लेकर राष्ट्रपति और जीवनशास्त्री ने अपने  
अपने मत प्रकट किए।

(4) मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी का क्या महत्त्व है?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न लेखक विनोबा भावे जी द्वारा लिखित “वाणी का सदुपयोग”  
नामक पाठ से लिया गया है। इसमें लेखक ने सही वाणी या उचित वाणी का  
महत्व बताया है।

वाणी मनुष्य को ईश्वर की दी हुई एक बड़ी देन है। मनुष्य के जीवन में वाणी अर्थात् बोलचाल का विशेष महत्व होता है। किस समय पर क्या बोलना है, कितना बोलना है, इन सब बातों को ध्यान में रखना चाहिए। विषय से हटकर नहीं बोलना चाहिए। विशेष विचारों को विशेष शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, ताकि सामनेवाले व्यक्ति को उसका महत्व समझ में आ जाए। मनुष्य जितना संयमित होकर अपने विचार प्रकट करेगा उसके विचार उतने ही प्रभावकारी और अर्थपूर्ण होंगे। मनुष्य की अच्छाई-बुराई अथवा उसका आचरण उसकी वाणी से पहचाना जाता है। वाणी ही मस्तिष्क में उठने वाले विचारों तथा चिंतन को प्रकट करने का सशक्त साधन है। मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्रों का आधार वाणी ही रही है। दर्शनों का भी यही प्रयास रहा है कि विचारों को सही वाणी में पेश किया जाए। गंभीर चिंतन करने वाले अपने विचार प्रकट करने के लिए उपयुक्त वाणी की खोज में रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन में सटीक वाणी ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। इसीलिए बोलते समय सोच-समझकर, विचार करके बोलना चाहिए।

(5) महात्मा गाँधीजी को स्नान के लिए ठीक समय पर गरम पानी क्यों पहुँचाया न जा सका?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न 'वक्त के साथ दगाबाजी' पाठ से लिया गया है। इस पाठ के लेखक श्री हरिवंशराय बच्चन जी हैं।

यह बात असहयोग आंदोलन के समय की है। असहयोग आंदोलन के सिलसिले में कांग्रेस के बहुत-से नेता प्रयाग के आनंद भवन में ठहरे हुए थे। गांधी जी भी वहीं ठहरे थे। जाड़े के दिन थे। आनंदभवन अतिथियों से भरा हुआ था। उनकी दैनिक सुविधाओं की देखरेख करने के लिए एक स्वयंसेवक दल बनाया गया था।

सर्दी के दिन थे। गाँधीजी को स्थान के लिए ठीक ग्यारह बजे गरम पानी पहुँचाने का आदेश था। गरम पानी तैयार था परंतु उस समय एक ऐसी बाल्टी बची थी, जिसका हैंडिल निकल गया था। कार्यकर्ता इस इंतजार में थे, कि कोई अच्छी बाल्टी खाली होकर आ जाय तो उसी को ले जाएँ।

यही कारण था कि गाँधीजी को स्थान के लिए ठीक समय पर गरम पानी नहीं पहुँचाया जा सका।

(ऊ) निम्नलिखित पठित गद्य परिच्छेद पर आकलन हेतु दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में लिखिए :

3

यह पर्णपाती वृक्ष है। अर्थात् वर्ष में एक बार इसके सभी पत्ते गिर जाते हैं और यह पर्णविहीन हो जाता है। सामान्यतया सर्दियों के मौसम में इसके पत्ते गिरते हैं और गर्मियों के मौसम में फूलों के समाप्त होते-होते नए पत्ते निकलने आरंभ हो जाते हैं। पलाश का वृक्ष जब तक एक छोटी झाड़ी के रूप में होता है, तभी इसमें बड़े-बड़े पत्ते निकलने लगने हैं। सामान्यतया यह देखा गया है कि जहाँ फूल निकलते हैं, वहाँ पत्ते नहीं निकलते और जहाँ पत्ते निकलते हैं, वहाँ फूल नहीं निकलते।

(1) पलाश को पर्णपाती वृक्ष क्यों कहा जाता है?

उत्तर : वर्ष में एक बार सभी पत्ते गिरने या पर्णविहीन हो जाने के कारण पलाश को पर्णपाती वृक्ष कहा जाता है।

(2) सर्दी और गर्मी में पलाश की क्या स्थिति रहती है?

उत्तर : सर्दी में पलाश के पत्ते गिरते हैं और गर्मी में फूलों के समाप्त होते ही नए पत्ते निकल आते हैं।

(3) परिच्छेद में पलाश की कौन-सी खासियत सूचित हुई है?



उत्तर : परिच्छेद में पलाश की पत्तियों व फूलों के गिरने- निकलने की खासियत सूचित हुई है।

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति पठित पदय-पाठों में प्रयुक्त, कोष्ठक में दिये उचित शब्द से कीजिए। शब्दों को अधोरेखांकित कीजिए : 3

(1) और नहीं पंखों में भी गति।

(2) गुण ही जन-मन किरीट , ताज हो ।

(3) हिंद के बहादुरा, शूरवीर बालको!

(किरीट, शूरवीर, खग, पंखों)

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पठित पदय-पाठों के आधार पर केवल एक-एक वाक्य में लिखिए : 3

1) कबीर ने साईं से अपने लिए क्या माँगा है?

उत्तर : कबीर ने साईं से सीमित या केवल जरूरत भर का धन माँगा है।

(2) सुबह से हमने क्या नहीं देखा है?

उत्तर : सुबह से हमने सूर्य को नहीं देखा है।

(3) मेघ को किसने जुहार किया ?

उत्तर : मेघ को बूढ़े पीपल ने जुहार किया।

(इ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आकलन हेतु दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3

यदि तू लौट पड़ेगा थककर,  
अंधड़ कालबवंडर से डर,  
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझको हँस-हँसकर।  
खग, उड़ते रहना जीवनभर !”

(1) कालबवंडर से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : कालबवंडर से कवि का तात्पर्य है मार्ग में आनेवाली आँधियाँ और तूफान।

(2) खग से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर : खग से हमें मार्ग में सदैव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा मिलती है।

(3) अपनों द्वारा खग की खिल्ली कब उड़ाई जाएगी?

उत्तर : खग जब उड़ते-उड़ते मार्ग में आनेवाले तूफानों से डरकर और थककर रुक जाएगा तथा पीछे वापस लौटेगा, तब अपनों द्वारा ही उसकी खिल्ली उड़ाई जाएगी।

(ई) निम्नलिखित पठित पदय-खंड का सरल गद्यार्थ लिखिए :

3

दान दिए धन ना घटे, नही न घटे नीर।

अपनी आँखों देख लो, यों क्या कहे कबीर।।

उत्तर : प्रस्तुत दोहा कवि कबीर द्वारा लिखित कबीर के दोहे नामक कविता से लिखा गया है।

इस दोहे में संत कबीर ने दान का महत्त्व स्पष्ट किया है। कबीरदास जी कहते हैं कि किसी को कुछ दान देने से हमारी संपत्ति में से कुछ भी कम नहीं होता।

जैसे नदी का पानी पीनेसे नदी के जल में कुछ भी कम नहीं होता। कबीरदास जी कहते हैं कि तुम स्वयं इस सच्चाई को अपनी आँखों से देख लो और दान देने में संकोच मत करो।

कवि कबीर कहते हैं कि सभी मनुष्य इस बात को स्वयं आजमाकर देख सकते हैं।

(3) निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पदय-पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए:

6

(1) ब्रजनारियाँ यशोदा माँ को अनोखा पूत जनने का उपालंभ क्यों देती हैं ?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न कृष्णभक्ति धारा के सर्वाच्च भक्तकवि सूरदास द्वारा लिखित 'सूरदास' नामक कविता से लिया गया है। इस काव्य में कृष्ण के नटखट रूप तथा बाल-हट का सुंदर वर्णन किया गया है।

ग्वालिनियाँ कृष्ण की शिकायत करते हुए यशोदा मैया से कहती हैं कि जब हम सभी लोग बाहर काम पर चले जाते हैं, तब दोपहर के समय तुम्हारा कान्हा सभी ग्वाल बालों को लेकर उस सूने घर में घुस आता है। चारपाई पर चढ़कर छींके में रखा हुआ दूध, दही और मक्खन चुराकर कुछ स्वयं खाता है, कुछ ग्वाल-बालों को खिलाता है तथा कुछ नीचे जमीन पर गिरा देता है। इस तरह रोज हमारे गोरस का नुकसान होता है।

इस प्रकार ब्रजनारियाँ नटखट कृष्ण की इन हरकतों से खीझ जाती हैं और क्रोधित रूप धारण करके यशोदा माँ को अनोखा पुत्र पैदा करने का उपालंभ देती हैं।

(2) कवि रहीम ने धन और इज्जत के बारे में क्या कहा है?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न कवि रहीम द्वारा लिखित 'रहीम के दोहे' नामक कविता से लिया गया है। कवि रहीम के अनुसार धन का महत्त्व सब स्वीकार करते हैं, पर समाज में कुलीनता का अपना विशेष स्थान है।

धन तो आता है और फिर चला जाता है। इसलिए धन से दुर्बल होने पर कोई भी मनुष्य दुर्बल नहीं कहलाता। धन का मूल्य बहुत कम है लेकिन प्रतिष्ठा मानव जीवन के लिए बहुमूल्य है। सम्मान व शील की सुरक्षा के लिए धन को त्यागा जा सकता है लेकिन धन की सुरक्षा के लिए मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा का त्याग नहीं किया जा सकता।

इस संबंध में कवि रहीम ने कुल की कुलवधू का उदाहरण दिया है। कुलवधू की यदि शालीनता, प्रतिष्ठा व इज्जत कायम अथवा सुरक्षित है तो फटे पुराने कपड़ों में भी वह सुंदर दिखाई पड़ती है। कुलवधू का आभूषण उसके कीमती कपड़े नहीं है। उसकी मान मर्यादा, शालीनता और प्रतिष्ठा ही उसका सबसे बड़ा गहना या आभूषण है।

हमें अपने शील और इज्जत की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए क्योंकि उसी से हमारी पहचान होती है, मानव का उत्थान होता है।

(3) गजलकार दुष्यंत कुमार ने आम आदमी की मजबूरियों को किन शब्दों में अभिव्यक्त किया है?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न 'मत कहो, आकाश में कुहरा घना है' नामक कविता से लिया गया है। इसके कवि हिंदी काव्यसाहित्य के सुप्रसिद्ध गजलकार श्री दुष्यंत कुमार जी हैं। कवि ने वर्तमान परिस्थितियों पर कठोर प्रहार करते हुए राजनीतिक निष्ठाहीनता व्यंगात्मक ढंग से व्यक्त की है। इसके माध्यम से उन्होंने आम आदमी की मजबूरियों को व्यक्त किया है।

साधारण जनता वर्तमान अव्यवस्था से परेशान है और उसमें बदलाव लाने के लिए वह आवाज उठाना चाहती है लेकिन उसे गंभीरता से नहीं लिया जाता है। यही नहीं बल्कि उसकी आवाज को दबाने की कोशिश की जाती है।

इस प्रकार आम जनता के इस कदम को उसकी व्यक्तिगत विचारधारा का नाम दिया जाता है और उसे उसके अधिकारों से वंचित रखने का प्रयास किया जाता है। उसकी समस्या हल नहीं होती। उसके लिए सारे दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं। उस पर अनेकों आरोप भी लगाए जाते हैं। इस तरह आम आदमी की शिकायत की उपेक्षा की जाती है।

अंत में आम आदमी के पास घुटकर जीने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता।

(4) 'मेघ' रूपी 'मेहमान' के आने से प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न कवि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा लिखित 'मेघ आए' नामक कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि ने मेघों के आगमन से वातावरण में होने वाले बदलाव का सुंदर वर्णन किया है।

वर्ष भर के लंबे इंतजार के बाद खूब ठाट- बाट के साथ मेघ रूपी मेहमान का आगमन हुआ है। हवा तेज चलने लगी, घर के दरवाजे और खिड़कियाँ अपने आप खुलने लगी। पेड़ झुककर झँकने लगे। धूल अपना घाघरा उठाकर भागने लगी। नदी ठिठककर अपना घूँघट सरकाने लगी। बूढ़े पीपल ने भी आदर से प्रमाण किया। लता ने किवाड़ के पीछे से कहा 'बरस' बाद अब हमारी याद आई। ताल प्रसन्न होकर परात भरके पानी ले आए। छत पर बिजली चमकने लगी। भरम की गाँठ खुल गई। सभी का आनंद प्रकट करना समझ में आ गया।

इस प्रकार मेघ रूप मेहमान के आने से प्रकृति अनोखे आह्लाद से भरकर झूम उठी है।

3. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पठित पूरक पाठों के आधार पर संक्षेप में लिखिए :

8

(1) चंदा माँगने वाले और देने वाले लोग एक दूसरे को किस प्रकार पहचान लेते हैं?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न हास्य और व्यंग के सुप्रसिद्ध लेखक श्री. हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'अपनी-अपनी बीमारी' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें लेखक ने चंदे के प्रति, माँगनेवाले और देनेवालों की प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की है। लेखक ने अमीरी और गरीबी के अंतर को व्यंग्यात्मक ढंग से स्पष्ट किया है।

एक गरीब व्यक्ति किसी अमीर व्यक्ति के पास चंदा माँगने जाता है। चंदे के पुराने अभ्यासी का चेहरा बोलता है। दोनों ही, चेहरे के हाव-भाव से एक-दूसरे को भाँप जाते हैं। दोनों एक दूसरे को शरीर की गंध भी बखूबी पहचानते हैं। लेनेवाला गंध से जान लेता है कि यह चंदा देगा या नहीं। देनेवाला भी माँगनेवाले के शरीर की गंध से समझ लेता है कि यह चंदा लिए बगैर वापस नहीं जाएगा।

लेखक बैठते ही समझ जाते हैं कि सामनेवाला व्यक्ति चंदा नहीं देगा। वे भी शायद समझ जाते हैं कि इन्हें टाला जा सकता है। फिर भी दोनों व्यक्ति अपना-अपना कर्तव्य निभाते हैं। लेखक ने चंदा माँगने के लिए प्रार्थना की। देनेवाले ने जवाब दिया कि आपको चंदे की पड़ी है, हम तो टैक्स भरते-भरते मरे जा रहे हैं।

चंदा माँगनेवाले लेखक को पहले से ही नकारात्मक प्रत्युत्तर की आशा थी। इस तरह चंदा माँगनेवाले और देने वाले अपनी-अपनी कला में अभ्यस्त होने के कारण एक-दूसरे को पहचान लेते हैं।

(2) तुलसी में कौन-कौनसे औषधीय गुण हैं?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न 'तुलसी का बिरवा' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें बताया गया है कि तुलसी पौधे में अनेकों बीमारियों को दूर करने की क्षमता व गुण है।

तुलसी का पौधा मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। यह वातावरण की वायु को शुद्ध रखती है। मच्छर तथा कीटाणुओं और पतंगों को दूर भगाती है। इसकी सुगंध अनेक रोगों के कीटाणुओं को भी नष्ट कर देती है। इटली और ग्रीस के लोगों को बहुत पहले ही तुलसी के पौधे में निहित औषधीय गुणों का पता चल गया था। वे इसका उपयोग चूहे व कीड़े भगाने के लिए किया करते थे। उनके यहाँ तुलसी कीड़े भगाने के लिए आज भी उपयोग में लाई जाती है। खाँसी, जुकाम, गले की बीमारियों तथा मलेरिया आदि में उबले पानी या चाय के साथ इसका सेवन लाभकारी होता है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह बात साबित हो चुकी है कि इसके बीजों से निकलने वाला तेल टी.बी. या यक्ष्मा के रोग का नाश कर डालता है।

भारत में तुलसी की पत्ती के साथ-साथ मंजरी को भी औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। छोटे बच्चों या शिशुओं को हिचकी लगते समय इसकी पत्ती की एक बिंदी बच्चे के माथे पर लगा देते हैं। गंदे स्थानों या कीटाणुओं वाली जगहों से लौटने के बाद लोग तुलसी की पत्ती मुँह में रखकर चबा लेते हैं। तुलसी की सुगंध सचमुच - रोगाणुनाशी व संक्रमणहारी होती है।

इस प्रकार तुलसी के अनेकों औषधीय गुण हैं जिससे सभी लोग लाभान्वित होते हैं। अभी भी इसके अनेकों गुणों पर पर्दा पड़ा हुआ है। जिसके लिए वैज्ञानिक सतत् प्रयत्नशील हैं।

अतः स्पष्ट है कि तुलसी में अद्भुत औषधीय गुणों का समावेश है।

### (3) थिंफू'का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न “थिंफू”: भूटान की वर्तमान राजधानी नामक पाठ से लिया गया है। लेखक प्रवीण कारखानीस ने ‘थिंफू’ की प्राकृतिक सुंदरता का बहुत सुंदर वर्णन किया है। तथा ‘थिंफू’ की पूरी जानकारी दी है।

‘थिंफू’ भूटान की राजधानी का शहर है। यह लगभग साडे सात हजार फुट की ऊँचाई पर बसा है। इसकी सुंदरता दार्जिलिंग या काठमांडू से किसी भी माने में कम नहीं है। ‘थिंफू’ के मकानों की रचना भूटानी पद्धति जैसी है। सभी मकान सरल रेखा में खड़े हैं। सभी मकानों पर नंबर लिखे रहते हैं। ‘थिंफू’ की जनसंख्या केवल पच्चीस हजार है जबकि पूरे भूटान की जनसंख्या सवा लाख है। ‘थिंफू’ में “बैंक आफ भूटान” नामक एक बैंक है। जिसकी इमारत बहुत ही कलापूर्ण तरीके से बनी है। उसकी सजावट किसी विलासी राजा के रंगमहल से कम नहीं है। ‘थिंफू’ में जैसे एक ही बैंक है - वैसे ही पेट्रोल पंप भी एक ही है। वहाँ पर भारतीय मुद्रा का भी प्रचलन है। इस नगर में राजधानी स्थापित करनेवाले नरेश ‘जिग्मे दोर जी वानचुक’ की स्मृति में बनाया गया श्वेतवर्ण का ‘छोटें’ बड़ा आकर्षक है। यह बुद्ध धर्मियों का तीर्थस्थान बन गया है। भूटान का राज्य संचालन थिंफू के ‘झाँग’ से होता है। यह एक देखने लायक जगह है।

### (4) धनंजय ने नदी में डूगती महिलाओं को कैसे बचाया?

उत्तर : प्रस्तुत प्रश्न ‘साहसी बालक’ नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में आचार्य महावीर प्रसाद दविवेदी , ईश्वरचंद्र विद्यासागर, पंडित गंगाधर शास्त्री, रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के जीवन में घटी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया है।

धनंजय तेरह वर्ष का एक साहसी बालक था। वह महाराष्ट्र राज्य के वाशिम जिले में स्थित एक छोटे से गाँव में रहता था। उस गाँव का नाम था असोला।



वह अपनी माँ का आज्ञाकारी पुत्र था। अपनी माँ की धार्मिक प्रवृत्ति की पूरी-पूरी छाप उसके चरित्र में दिखाई पड़ती थी।

20 अगस्त 2002 को वह अपनी माँ के साथ गाँव के समीप स्थित नदी में पूजा करने गया था। नहा धोकर वे दोनों पूजा करने लगे। अचानक धनंजय को अपने साथ ही नहाने आई अन्य पड़ोसी महिलाओं की चीख सुनाई पड़ी। धनंजय ने देखा कि नहाते-नहाते वे भारी भँवर में फँस गई थीं। वह तुरंत उन्हें बचाने के लिए नदी में कूद पड़ा। वह तैरता हुआ उन महिलाओं तक पहुँचा। भँवर काफी तेज था। काफी मशक्कत के बाद वह एक महिला का हाथ पकड़कर उन्हें किनारे की ओर खींचकर ले गया। उसके बाद वह फिर नदी के भँवर में कूदा। भँवर काफी तेज था और गहरता भी जा रहा था। इसी तरह वह एक-एक करके चार महिलाओं को भी किनारे तक लाने में सफल रहा।

काफी मशक्कत व साहस के साथ धनंजय ने नदी में डूबती सभी महिलाओं को बचाया।

इस प्रकार धनंजय ने अपने साहस का परिचय देकर चार महिलाओं को नया जीवनदान दिया।

अथवा

निम्नलिखित दो पठित पूरक पाठों में से किसी एक का सार लिखिए :

(1) गंगा बाबू हैं कौन?

गंगा बाबू कौन? - शिवानी लिखित एक प्रसिद्ध संस्मरण कथा है। इस संस्मरण कथा में शिवानी ने एक ऐसे व्यक्तित्व को सामने रखा है, जो स्वयं अनेक संस्मरणों का जीता-जगता शब्दकोश था।

गंगा बाबू से लेखिका शिवानी जी का परिचय दस वर्ष पहले हुआ था। नाटा-सा कद, भारी-भरकम शरीर, सरल वेश-भूषा, गंभीरता लिए मुख-मंडल को प्रकाशित करती स्नेही मुस्कान, यही है गंगा बाबू का यथार्थ शब्द-चित्र। शिवानी को लिखे अपने पत्र में गंगा बाबू ने संस्मरण कला का पूरा निचोड़ ही निकाल कर रख दिया था। उन्होंने लिखा था, संस्मरण ऐसा हो कि जिसे कभी देखा भी न हो, उसकी साक्षात् छवि ही सामने आ जाए, उसका क्रोध, उसकी परिहास रसिकता, उसकी दयालुता, उसकी गरिमा, उसकी दुर्बलता सब कुछ सशक्त लेखनी आँकती चली जाए, वही उसकी सच्ची तस्वीर है, वही सफल संस्मरण।

लेखिका ने तब कभी सोचा भी न था कि एक दिन उसी दुर्लभ व्यक्तित्व पर उसे लेखनी चलानी पड़ेगी, जिसने कि संस्मरण का ककहरा सिखाया था, जो स्वयं न जाने कितने दुर्लभ संस्मरणों का जीता-जागता कोश था। किसी गोष्ठी की अध्यक्षता करनी हो या किसी अनुष्ठान के लिए आमंत्रित करना हो, वे हिंदी के समर्थ साहित्यकारों से आग्रह करना नहीं भूलते थे। फिर चाहे वे महादेवी या शिवानी ही क्यों न हों। गत वर्ष गंगा बाबू के आग्रह पर महादेवी ने लक्खी सराय के जिस बालिका विद्यापीठ के अहाते में वृक्ष लगाया था, उसी के पार्श्व में शिवानी ने भी एक पौधा लगाया। कन्याओं की विदाई के अवसर पर आमंत्रित शिवानी की चार दिनों तक गंगा बाबू ने जिस स्नेह-भावना से देखभाल की, उसे लेखिका कभी भूली नहीं। चलते समय उन्होंने लेखिका को इतनी सौगातें बाँध दीं, जैसे वे अपनी पुत्री को विदा कर रहे हों। अपने स्नेहमय समर्पित जीवन से उन्होंने सभी को बाँध दिया था।

हिंदी के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों में से अनेक व्यक्तियों को भी यह जानकारी नहीं है कि गंगा बाबू कौन हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि हम हिंदी के ऊँचे महल की सराहना करते हैं, पर उसकी नींव में लगे पत्थरों (हिंदी-सेवियों) को याद नहीं करते। ऐसे लोगों को याद करने के लिए हम एकाध शोक-सभा कर लेते हैं या कोई संपादकीय छाप देते हैं। ऐसे लोगों के जीवनकाल में उनकी कृतियों की सराहना

करना हमारा स्वभाव नहीं है। इसीलिए हम कभी यह प्रश्न पूछते हैं - “ये गंगा बाबू कौन हैं?”

## (2) टेसी थॉमस।

आजकाल महिलाएँ विज्ञान, खेल, चिकित्सा, शिक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान, रक्षा, कला तथा लेखन आदि अनेक क्षेत्रों में अभूतपूर्व सफलता अर्जित कर रही हैं।

जीवन के विविध क्षेत्रों में आधुनिक भारतीय महिलाओं ने अपनी उत्कृष्ट सेवाओं द्वारा जो अमूल्य योगदान दिया है, उस पर हर भारतीय गर्व का अनुभव करता है। खेल, चिकित्सा, वैज्ञानिक शोध, शिक्षण, अंतरिक्ष, अनुसंधान, रक्षा आदि विविध क्षेत्रों को आधुनिक भारतीय महिलाओं ने अपने अपूर्व साहस, कठिन परिश्रम, लगन एवं अपनी अतुलित बुद्धिमत्ता से जो गौरव प्रदान किया है, वह अभिमान करने योग्य है। इन्हीं महिलाओं में एक नाम है सुश्री टेसी थॉमस का। उन्होंने पुरुषों के वर्चस्व वाले मिसाइल जगत में आज जो मुकाम हासिल किया है, उसे उन्होंने अपने असीम धैर्य एवं साहस के साथ उत्कृष्ट योगदान से प्राप्त किया है। वे 19 अप्रैल को सफलतापूर्वक छोड़ी गई अग्नि - V मिसाइल की प्रोजेक्ट डाइरेक्टर (मिशन) थीं। टेसी थॉमस को सर्वप्रथम सन 1985 में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी. आर. डी. ओ.) के एक कार्यक्रम के लिए चुना गया था। उन्होंने कुछ समय के लिए पुणे में डी. आर. डी. ओ. के लिए गाइडेड मिसाइलों की फैकल्टी के रूप में काम किया था। उस समय उन्हें डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में काम करने का अवसर मिला था। फिर वे वीडकल और मिशन की प्रोजेक्ट डाइरेक्टर के रूप में अग्नि - IV की मुखिया बनीं। इसके बाद उनके कैरियर में तेजी से वृद्धि हुई। टेसी थॉमस को मिसाइल से इतना प्रेम है कि उन्होंने अपने बेटे का नाम तक भारत के हल्के कॉम्बैट जेट के नाम पर 'तेजस' रखा है। उन्होंने अपने आप को अग्नि मिसाइल के नवीनतम संस्कारणों से जोड़ रखा है। वे इस बात पर गर्व करती हैं कि वे उस डी. आर. डी. ओ. संस्थान से संबद्ध हैं, जहाँ अनेक महिला

वैज्ञानिक कार्य करती हैं। अग्नि - V की सफलता के बाद अब उनका लक्ष्य मल्टीपल इंडिपेंडेंट री-एंट्री वीइकल पर केंद्रित है।

सुश्री टेसी थॉमस केरल के अलप्पुझा शहर की रहने वाली हैं और उनके पति सरोजकुमार पटेल एक नौसेना अधिकारी हैं।

(अ) निम्नलिखित दो शब्दों में से किसी एक शब्द का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) धीरे-धीरे;

वह धीरे धीरे घनुषाकार होता जा रहा था।

(2) कि।

नौकर ने कहा कि मेरा कोई दोष नहीं।

(आ) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में अधोरेखांकित शब्द का शब्दभेद लिखिए :

1

(1) वाह ! कितना सुंदर बगीचा है!

विशेषण

(2) उसकी स्थिति होटल के 'शेफ' की तरह हो गई।

संबंधबोधक अव्यय

(इ) कोष्ठक में दी गई सूचना के अनुसार निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य का कालपरिवर्तन कीजिए :

1

(1) वह लगातार रो रहा था। (पूर्ण वर्तमानकाल)

वह लगातार रोया था।

(2) इतने लोग छत पाते हैं। (सामान्य भूतकाल)

इतने लोगों ने छत पाई।

(ई) निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए :

1

(1) पलाश की लकड़ी से यज्ञ में काम आने वाले पात्र बनाए जाते हैं।

जाते - जाना

(2) उसके आँसुओं ने स्पीड पकड़ ली।

ली - लेना

अथवा

निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दौड़ना : वह घर से निकल दौड़ा ।

(2) चलना : हम धीरे धीरे आगे पढ़ चले।

(उ) निम्नलिखित दो क्रियाओं में से किसी एक क्रिया के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

1

(1) लगना : लगाना, लगवाना

(2) पीना : पिलाना, पिलवाना

अथवा

निम्नलिखित दो वाक्यों में से किसी एक वाक्य में प्रयुक्त प्रेरणार्थक क्रिया रूप छाँटकर उसका प्रकार लिखिए :

(1) रानी ने आया से बच्चे को खिलवाया।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया

(2) भूकंप ने उन्हें नींद में ही सुलाया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया

(ऊ) निम्नलिखित तीन वाक्यों में से कोई दो वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

2

(1) आवाज बहू के कान में पहुँचा।

आवाज बहू के कानों में पहुँची।

(2) तौलिया भिगकर वजनदार हो गई।

तौलिया भीगकर वजनदार हो गया।

(3) तुम पश्चिम के ओर जाते है।

तुम पश्चिम की ओर जाते हो ।

अथवा

निम्नलिखित तीन वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों में योग्य विराम- चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(1) सर वह बर्तन माँजने वाली

सर वह ! बर्तन माँजने वाली ?

(2) हो गई पार्टी पत्नी मुस्कारा रही है

हो गई पार्टी?, पत्नी मुस्कारा रही है ।

(3) देखिए मेनू में एक खास परिवर्तन करना है

देखिए मेनू में, एक खास परिवर्तन करना है ।

(ए) निम्नलिखित पाँच मुहावरों में से किन्हीं तीन मुहावरों के हिंदी अर्थ देकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

3

(1) मन लगाना : कोई काम लगन से करना, रुचि पैदा होना।

मनन ने दसवीं की परीक्षा की तैयारी मन लगाकर की थी।

(2) मस्तक नवाना : सिर झुकाना।

परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए सभी छात्रों ने देवी सरस्वती माँ के आगे मस्तक नवाया।

(3) खिल-खिलाकर हँसना : जोर से हँसना।

चाची जी को हमेशा खिल-खिलाकर हँसने की आदत है।

(4) नेत्र बेचकर चित्र खरीदना : किसी जरूरत को पूरा करने के पीछे, जरूरत के कारण को ही बदले में दे देना ।

सभ्य वाणी को खोकर सुलभ साधनोंको प्राप्त करना यह तो वैसा ही है जैसे कोई अपने नेत्र बेचकर चित्र खरीद ले और उससे देखने का सुख भोगना चाहे।

(5) निगल जाना : गले के नीचे उतार लेना।

कुछ लोग बड़ी आसानी से अपना दुःख निगल जाते हैं।

अथवा

निम्नलिखित वाक्यों में से अधोरेखांकित तीन वाक्यांशों के बदले कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से योग्य मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

(खरीद लेना, मालूम होना, गवारा न करना, बहुत ,खुश होना)

(1) उसे पता चला कि कुछ नए दूधवालों ने धंधा शुरू किया है।

उसे मालूम हुआ कि कुछ नए दूधवालों ने धंधा शुरू किया है।

(2) दामू ने हलवाई से पाँच किलो मिठाई मोल ली।

दामू ने हलवाई से पाँच किलो मिठाई खरीद ली।

(3) तरह-तरह के फल देखकर बच्चे फूले नहीं समाते।

तरह-तरह के फल देखकर बच्चे बहुत ,खुश होते हैं।



5. निम्नलिखित चार विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग डेढ़ सौ से दो सौ शब्दों तक निबंध लिखिए :

10

(1) विज्ञान के चमत्कार;

आज का युग विज्ञान का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने एक क्रांति पैदा कर दी है। विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं के लिए जो नए-नए आविष्कार किए हैं, वे सब विज्ञान की ही देन हैं।

बिजली की खोज विज्ञान की एक बहुत बड़ी सिद्धि है। आज मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से कई बड़े क्षेत्रों में सफलता पाई है जैसे कि चिकित्सा, सूचना क्रांति, अंतरिक्ष विज्ञान, यातायात आदि।

यातायात- संबंधी वैज्ञानिक आविष्कारों ने संसार को एकदम छोटा कर दिया है। पहले जहां मानव को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कई-कई वर्ष लग जाते थे वहीं आज मानव कई मील की दूरियों को हेलीकॉप्टर, हवाई जहाज, कार आदि द्वारा कम समय में पार कर लेता है।

आज रेडियो, टेलीविजन, डीवीडी प्लेयर, थ्रीडी सिनेमा, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें विज्ञान द्वारा मनुष्य के मनोरंजन के लिए उपलब्ध कराया है। मोबाइल, इंटरनेट, ईमेल, मोबाइल पर 3जी और इंटरनेट के माध्यम से फेसबुक, ट्विटर ने तो वाकई मनुष्य की जिंदगी को बदलकर ही रख दिया है।

चिकित्सा और कृषि के क्षेत्रों में भी नई नई खोजों से बहुत लाभ हुआ है। विज्ञान द्वारा खाद व उपकरण, खाद्य पदार्थ, वाहन, वस्त्र आदि बनाने के असीमित कारखाने हैं।

विज्ञान के युद्ध-विषयक अस्त्र शस्त्रों के आविष्कारों ने देश की सभ्यता और संस्कृति को खतरे में डाल दिया है। परमाणु बम और हाइड्रोजन बम भी विज्ञान की ही देन हैं।

यह बहुत ही विनाशक हैं। विज्ञान का उपयोग विनाश के लिए नहीं, विकास के लिए होना चाहिए।

## (2) हमारा राष्ट्रीय पक्षी मोर;

भारत में तरह- तरह के पक्षी हैं। किंतु राष्ट्रीय पक्षी होने का गौरव केवल मोर को प्राप्त है। इन्हें वैसे नदी व जलस्रोतों के पास वाले जंगल पसंद होते हैं। ये अक्सर घने पेड़ों वाले इलाके में रहते हैं। मोर के सर पर मुकुट जैसी खूबसूरत कलंगी होती है। इसकी लम्बी गर्दन पर सुन्दर नीला मखमली रंग होता है।

मोर मुख्य रूप से घास-पात, ज्वार, बाजरा, चने, गेहूं, मकई जैसे अनाज खाते हैं। यह बैंगन, टमाटर, प्याज जैसी सब्जियाँ भी खाते हैं। अनार, केला, अमरुद आदि भी इसके प्रिय भोजन हैं। मोर कीड़े-मकोड़े, चूहे, छिपकली, साँपों आदि को भी चाव से खाते हैं। ये साँपों के सबसे बड़े दुश्मन हैं। कहावत है कि जहां मोर की आवाज सुनाई पड़ती है, वहां नाग भी नहीं जाता। इसलिए यह किसानों का अच्छा मित्र होता है।

मोर का नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। मयूर नृत्य समूह में किया जाता है। नृत्य के समय मोर अपने पंख फैला कर बड़ा सुन्दर मगर धीमी गति का नृत्य करता है। इसके नृत्य को देखकर मानव इतना प्रभावित हुआ है कि मयूर नृत्य को हमने नृत्य में शामिल कर लिया है।

इसके अलावा भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्य मोर के नृत्य की तर्ज पर होते हैं।

मोर भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। बहुत पहले प्राचीन हिंदू धर्म में इंद्र की छवि मोर के रूप में चित्रित की गई थी। भगवान कृष्ण तो अपने सिर पर मोरपंख लगाते थे। दक्षिण भारत में मोर भगवान कार्तिकेय के वाहन के रूप में जाना जाता है। मोर का शिकार भारत में पूर्णतया प्रतिबंधित है। इसे भारतीय वन्य-जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत पूर्ण संरक्षण दिया गया है।

(3)

;

मैंने अपनी पच्चीस वर्ष की आयु से ही समाजसेवा की शुरुवात कर दी थी। मेरे पिताजी एक प्रसिद्ध समाजसेवक थे, उन्होंने गाव में लड़कियों के लिए कन्याशाला खुलवाई थी।

मैंने भी उनसे प्रेरणा पाकर शोषित महिलाओं की मदद करने के लिए एक संस्था खोली। महिलाएँ यहाँ अपनी समस्याएँ लेकर आती थीं। हमारी संस्था की महिलाएँ उनकी हिम्मत बढ़ाती, रोजगार दिलाती, उन्हें आत्म निर्भर बनाती ताकि वे एक अच्छा जीवन जी सकें।

इसके बाद मैंने गरीब लोगों के लिए चिकित्सालय बनवाये, गरीब मजदूरों के लिए रात में प्रौढ़ शिक्षा वर्ग की व्यवस्था की।

फिर मैंने कुछ लोगों की सहायता से एक संस्था बनाई जिसके द्वारा कई समाजसेवा के कार्य किए जैसे- अनाथाश्रम बनाना, दहेज प्रथा के विरोध में अभियान चलाना, धार्मिक कार्यक्रम, किसानों के लिए भूदान अभियान, नशाबन्दी अभियान।

अब बढ़ती उम्र के साथ यह सम्भव नहीं की कुछ और सेवा कर पाऊँ किन्तु सब को यही सन्देश देना चाहूँगा कि जीवन में गरीब और लाचार लोगों की हमेशा मदद करना।

इस प्रकार मैंने जीवन भर लोगों की सेवा की। लेकिन दुख इस बात का है कि आज लोग मुझे भूल गए हैं।

(4) यदि हिमालय न होता।

हिमालय संस्कृत के 'हिम' तथा 'आलय' शब्दों से मिलकर बना है, जिसका शब्दार्थ 'बर्फ का घर' होता है। हिमालय भारत की धरोहर है। यह भारतवर्ष का सबसे ऊँचा पर्वत है। हिमालय हमारा सिर्फ पालक या प्रहरी ही नहीं है। न ही शांति, सुंदरता और रोमांच ही इसके मायने हैं। इन सबसे कहीं आगे हमारे अस्तित्व की सबसे बड़ी जरूरत है हिमालय।

यदि हिमालय न होता तो उत्तर भारत की सुरक्षा कौन निभाता ? यदि हिमालय न होता तो गंगा, यमुना, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियाँ कहाँ से निकलती ? हिमालय की छाया में एवरेस्ट, लान्स, नंदादेवी आदि इसके मुख्य हिम शिखर हैं। हिमालय भारत का पहरेदार है। यदि हिमालय न होता तो शत्रुओं से हमारी रक्षा कौन करता ? हिमालय उत्तर के बर्फीले पवनों को भारत में प्रवेश करने से रोकता है। दक्षिणी - पश्चिमी मानसूनी पवन हिमालय की ऊँची पर्वत-श्रेणियों से टकराकर भारत में वर्षा करते हैं। यही वर्षा देश को कृषिप्रधान देश बनाती है। इस वजह से भारत को 'सोने की चिड़िया कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ है।

पुराणों के अनुसार हिमालय मैना का पति और पार्वती का पिता है। गंगा इसकी सबसे बड़ी पुत्री है। भगवान शंकर का निवास कैलाश यहीं है। महाभारत के अनुसार पांडव स्वर्गारोहण के लिए यहीं आए थे।

इस तरह हिमालय सदा से भारतीय संस्कृति, इतिहास और गौरव का साक्षी रहा है।

(अ) निम्नलिखित कार्यालयीन तथा व्यावसायिक दो पत्रों में से किसी एक पत्र का लिफाफे सहित प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए :

4

(1) दसवीं में पढ़ने वालीवाला सुधा/सुधीर देसाई, 20 विदयानगर, कुडाळ से न्यू इंग्लिश स्कूल, कुडाळ के प्रधानाचार्य के मार्फत मा. शिक्षाधिकारी, माध्यमिक शिक्षण विभाग, जिला परिषद, सिंधुदुर्ग को पत्र लिखकर अपनी जन्मतिथि में सुधार के लिए प्रार्थना पत्र लिखती/लिखता है।

सुधीर देसाई,

20, विदयानगर,

कुडाल।

दिनांक : 14 जून 2013

सेवा में,

माननीय शिक्षाधिकारी,

माध्यमिक शिक्षण विभाग,

जिला परिषद,

सिंधुदुर्ग।

विषय - गलत जन्मतिथि में सुधार करने के संबंध में।

(द्वारा - माननीय प्रधानाध्यापिका, न्यू इंग्लिश स्कूल, कूडाल।)

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं सुधीर, न्यू इंग्लिश स्कूल, कुडाल का छात्र हूँ। मेरी जन्मतिथि विद्यालय के रिकार्ड में गलत लिखी गई है। विद्यालय के

रिकार्ड के अनुसार मेरी जन्मतिथि 21 फरवरी 2000 है जबकि मेरी सही जन्मतिथि 24 फरवरी 1999 है। प्रमाण के तौर पर मैं नगरपालिका द्वारा जारी जन्मतिथि प्रमाण-पत्र भेज रहा हूँ।

मेरी हाईस्कूल की परीक्षा भी निकट आ गई है। मैं चाहता हूँ कि दसवीं की परीक्षा में बैठने से पहले रिकार्ड में मेरी सही जन्मतिथि दर्ज हो जाए, ताकि बाद में इस बारे में कोई झंझट न हो। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही मेरी जन्मतिथि में सुधार करने की कृपा करें। साथ ही संबंधित सूचना मेरे विद्यालय के कार्यालय में भी भिजवाने की कृपा करें।

इसके लिए मैं आपका अति आभारी रहूँगा।

कष्ट के लिए क्षमा।

धन्यवाद।

भवदीय,

सुधीर।

संलग्न :

जन्म प्रमाणपत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि।

<p>प्रेषक, सुधीर देसाई, 20, विद्यानगर, कुड़ाल।</p>	<p>प्रति, माननीय शिक्षाधिकारी, माध्यमिक शिक्षण विभाग, जिला परिषद, सिंधुदुर्ग।</p> <p>टिकट</p>
--	---

(2) रमेश/रमा पवार, 74 विद्याप्रसाद, प्रतापसिंह नगर, सातारा 415004 से मा.

व्यवस्थापक, अजब पुस्तकालय, भवानी मंडप, कोल्हापुर को पत्र लिखकर विशेष अध्ययन के लिए मान्यवर हिंदी लेखकों की कुछ पुस्तकें मँगाता/मँगाती है।

रमेश पवार

74 विद्याप्रसाद,

प्रतापसिंह नगर,

सातारा 415004 ।

दिनांक : 28 मार्च 2013

मा. व्यवस्थापक,

अजब पुस्तकालय,

भवानी मंडप, कोल्हापुर।

विषय - अध्ययन के लिए हिंदी लेखकों की कुछ पुस्तकें मँगाना।

महोदय,

आपका सूचीपत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद!

मैंने आपकी पुस्तकों की सूची देखी जिसमें से मैं कुछ पुस्तकों का अध्ययन करना चाहती हूँ। इसीलिए मुझे निम्नलिखित पुस्तकें मँगानी हैं। यह प्राप्त होते ही ये

पुस्तकों ऊपर लिखे पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें।

आपके नियमों के अनुसार पेशगी के रूप में तीन सौ रुपये का पोस्टल ऑर्डर इस पत्र के साथ भेजा है। शेष रकम की वी.पी.पी. कर दें, जो यहाँ पहुँचते ही छुड़ा ली जाएगी।

	पुस्तकों के नाम	लेखक	प्रतियाँ
1.	गोदान	प्रेमचन्दजी	1
2.	साकेत	मैथिलीशरण गुप्त	1
3.	मानसरोवर भाग 2	प्रेमचन्दजी	1

भवदीय,  
रमेश पवार।

प्रति, मा. व्यवस्थापक, अजब पुस्तकालय, भवानी मंडप, कोल्हापुर।	टिकट
प्रेषक, रमेश पवार 74 विद्याप्रसाद, प्रतापसिंह नगर, सातारा 415004 ।	

अथवा

निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए :

धुलाई के लिए प्रयोग किए जानेवाले साबुन का विज्ञापन तैयार कीजिए।

धुलाई बार से कपड़ों की करलो सफाई,

किफायती दाम में धुलाई सुहानी।

धुलाई बार



(आ) निम्नलिखित रुपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए। उसे उचित शीर्षक दीजिए और यह भी दर्शाइए कि उससे क्या सीख मिलती है : 4

चार चोर \_\_\_ धन चुराना \_\_\_ बँटवारे के लिए जंगल में जाना \_\_\_ भूख लगना \_\_\_  
दोनों का मिठाई लाने नगर में जाना \_\_\_ मन में पाप \_\_\_ मिठाई में जहर मिलाना \_\_\_  
जंगल के दोनों चोरों की भी नीयत बिगड़ना \_\_\_ हाथ-मुँह धोने के बहाने कुँएँ पर ले  
जाना \_\_\_ कुँएँ में धकेलना \_\_\_ शेष दोनों का मिठाई खाना \_\_\_ परिणाम।

एक बार चार चोर मिलकर अमीर सेठ के घर पर चोरी करते हैं। उन्हें वहाँ से बहुत सा धन, हीरे, सोने के हार, कंगन बहुत कुछ मिलता है। वह बहुत खुश हो जाते हैं। वे वहाँ से भागकर जंगल की ओर जाते हैं।

जंगल में चारों ने आराम किया। भूख लगने पर दो जंगल से गाँव में मिठाई लेने खरीदने के लिए जाते हैं। रास्ते में उनकी नियत खराब होने लगती है। दोनों ने अपने साथियों को चोरी का माल पाने के लिए जहर वाली मिठाई खिलाने का निश्चय किया। उधर दूसरे दोनों ने भी उन्हें पानी में धक्का देकर अपने साथियों को मारने की योजना बनाई।

दोनों ने मिलकर अपने साथियों को जहर वाली मिठाई खिला दी। सब पानी पीने गए और दूसरे दोनों ने उन्हें पानी में गिरा दिया फिर अंत में बचे हुए दोनों जहर से तड़प कर मर गए।

सीख : 'जैसा करोगे, वैसा पाओगे'।

(इ) निम्नलिखित अपठित गद्य-खंड पर आकलन हेतु चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों : 4

आकाश में ग्रहों का पता लगाना जरा भी कठिन कार्य नहीं है। ये सभी सूर्य के भ्रमणपथ के आसपास ही रहते हैं। सूर्य आकाश में जिस मार्ग से खिसकता दिखाई देता है, उसे रविमार्ग कहते हैं। इस रविमार्ग के सत्ताईस समान भाग नक्षत्र और बारह समान भाग राशियाँ हैं। ये नक्षत्र या राशियाँ वर्तुलाकार के भाग हैं और इसीलिए इन्हें विभागात्मक नक्षत्र अथवा राशियाँ कहा जाता है। इनके नाम भी इन विभागों के समीप आए हुए नक्षत्रों और राशियों के अनुसार हैं। अधिक स्पष्टता के लिए इन दूसरे प्रकार के नक्षत्रों अथवा राशियों को तारात्मक नक्षत्र या राशियाँ कहा जाता है। सूर्य, चंद्रमा और ग्रह नक्षत्रों अथवा राशियों में से होकर गुजरते रहते हैं। अमुक समय में आकाश में ये सभी कहाँ दिखाई देंगे, इनका दैनंदिन ब्योरा अपने देशी पंचांगों में दिया जाता है। जिनका आकाश के तारों से परिचय है, ऐसे लोग स्थिर ग्रहों को झट पहचान लेते हैं।

1 रविमार्ग किसे कहते हैं ?

2 सूर्य, चंद्रमा और ग्रह कहाँ से होकर गुजरते हैं ?

3 कैसे लोग स्थिर ग्रहों को झट पहचान लेते हैं ?

4 अमुक समय में आकाश में सूर्य, चंद्रमा और ग्रह कहाँ दिखाई देंगे, इनका दैनंदिन ब्योरा कहाँ दिया जाता है ?